शब्द शक्ति (शब्द की ताकत, सामार्थ्य/क्षमता)

परिभाषा :– प्रत्येक शब्द से जो अर्थ निकलता है, उसके अर्थ को बोध कराने वाली शक्ति शब्द–शक्ति कहलाती है।

- शब्द,अभिव्यक्ति की सबसे महत्वपूर्ण इकाई है, शब्दों के बिना किसी प्रकार की अभिव्यक्ति संभव ही नही है, शब्दों के माध्यम से ही अर्थ अभिव्यक्ति होता है।
- शब्दशक्ति को शब्दवृति के नाम से भी जाना जाता है।
- कुछ वाक्य ऐसे होते है जिनके अर्थ सभी लोगों के लिए समान होते है लेकिन कुछ वाक्य ऐसे होते है जिनका अर्थ प्रत्येक व्यक्ति अपनी परिस्थितियों के अनुसार लेते है। इसी आधार पर उस वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के प्रकार, शक्ति और व्यापकता के आधार पर उसे विभिन्न प्रकार से विभक्त किया जाता है–

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

जैसे – उसे रोको मत, जाने दो।।

उसे रोको, मत जाने दो।।

- शब्द अनेक प्रकार के होते है। परंतु प्रमुखतया आ० मम्मट ने अपनी रचना काव्य प्रकाश शब्द शक्ति के तीन प्रकार बताए है–

(1) अभिधा शब्दशक्ति – अभिधार्थ /वाच्यार्थ

(2) लक्षणा शब्दशक्ति – लक्ष्यार्थ

(3) व्यंजना शब्दशक्ति – व्यंग्यार्थ

➢ शब्द शक्तियों के अनुसार शब्द के तीन प्रकार होते है :–

(1) वाचक (2) लक्षक (3) व्यंजक

(1) वाचक – वाचक शब्द वे शब्द होते है जो किसी अर्थ के वाचक होते है।

जैसे – अभ्यास, उपदेश

(2) लक्षक – लक्षक शब्द वे होते है जो वाचक से कोई मिलता जुलता अर्थ बोध कराते है।

जैसे – वह बैल है।

(3) व्यंजक – व्यंजक शब्द वे होते है जिनसे किसी ऐसे अर्थ की व्यंजना होती है जो अर्थ सामान्यतया उस शब्द द्वारा ग्रहण नहीं किया जाता है।

जैसे – सूर्यास्त हो गया है।

➢ वाक्य का मुख्यार्थ के साथ–साथ –

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

➢ भोजन पकाने का समय हो गया।

➢ पढ़ना बन्द करने का समय हो गया है ।

➢ भ्रमण करने का समय हो गया।

(1) अभिधा शब्दशक्ति :– जिस शब्दशक्ति में किसी शब्द के साधारण या लोक प्रचलित अर्थ को बताता हो उसे अभिधा शब्दशक्ति कहते है।

जैसे – मोहन पढ़ रहा है।

गीता नाच रही है।

(2) लक्षणा शब्दशक्ति – जिस शब्दशक्ति में किसी शब्द के साधारण अर्थ का बोध न होकर अन्य अर्थ को बताता हो उसे लक्षणा शब्दशक्ति कहते है।

जैसे – ऐसे गदहो को तो समझाना बेकार है।

– राम का शरीर तो लोहे का बना है।

- लक्षणा शब्दशक्ति के दो भेद होते है –

(I) रूढ़ि लक्षणा (लोकोक्ति व मुहावरो से अर्थ ग्रहण होता है।)

(II) प्रयोजनवती लक्षणा (मुख्यार्थ + लक्ष्यार्थ)

(3) व्यंजना शब्दशक्ति – जिस शब्दशक्ति में अभिध व लक्षणा दोनो के अर्थ बाधित हो जाए तथा कोई अन्य अर्थ को बताये तो वह व्यंजना शब्दशक्ति कहलाता है।

जैसे – सुबह हो गयी।

- सभी लोगों के उठने का समय हो गया।
- घर में झाड़ू लगाने का समय हो गया।
- जानवरों को गौशाला से बाहर निकालने का समय हो गया।
- व्यंजना शब्दशक्ति के दो भेद होते है–

(I) शाब्दी व्यंजना

(II) आर्थी व्यंजना

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का